क्योंकि बहना ही मेरी नियति थी!

दीपक सिंह बिष्ट

क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!
पर्वतों से नीचे मैदानों की ओर
बहना ही मेरी नियति थी
मेरा वेग मेरी तरंग
मेरा रूप मेरी उमंग
बदलेगा, ये भी तय था
शायद मैं यूं न इठला पाऊंगी
और पहाड़ों से दूर इस सरीखे
शायद ही बलखा पाऊंगी
फिर भी मैं बहती रही
क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!

उतर के नीचे समतल में
मेरा किरदार बदल गया
अभी तक पत्थरों के बीच खेलती
चट्टानों की चुनौतियों को झेलती
धरती के विस्तार के साथ
पहाड़ी ढलानों की मेरी छलांगें
मैदानों में शिथिल हो गई
और साथ ही शिथिल हो गया
मेरा सामर्थ्य
और जीवदायिनी प्रवाह
फिर भी मैं बहती रही
क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!

मुझे दुःख नहीं था
यूं शिथिल हो जाने का
और न ही दुःख था
पहाड़ से मैदान पर आने का
लेकिन ये कैसा उपहार है
जिसने मुझे कुरूप बना दिया
मेरे दुग्ध-वर्ण को
काला और स्याह बना दिया
ये मैं नहीं, मेरा किरदार नहीं
ऐसा भाग्य मुझे स्वीकार नहीं
फिर भी मैं बहती रही
क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!

विकृत मुझे यूं क्यों किया
ये विकार मुझमें क्यों दिया
ये दुर्गंध तो कभी मेरी संगिनी न थी
पहाड़ों में मुझमें कोई गंदगी न थी
अब स्वयं से अधिक गंदगी ढो रही हूं
मैं अपने भाग्य पर रो रही हूं
मेरे रूप का ये कुरूप प्रतिबिंब, और
इस प्रतिबिंब की कुरूप वास्तविकता
मुझे स्वीकार नहीं
फिर भी मैं बहती रही
क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!

दूषित नालों के सर्प दंश सहती
उनके विष को ले कर बहती
जो मेरी गरिमा का हनन करते
मुझे हर कदम पर मलिन करते
भंग करते मेरी अस्मिता को
और दूषित मेरी पवित्रता को
आहत इन प्रताड़नाओं से
सहन शक्ति अब शून्य हुई
और शून्य हुई मैं प्राणों से
फिर भी मैं बहती रही,
लेकिन इस बार....
अपने मृत शरीर के साथ
क्योंकि.... बहना ही मेरी नियति थी!

संपर्क करें:
दीपक सिंह बिष्ट
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
क्षेत्रीय केंद्र जम्मू-180003
जम्मू एण्ड कश्मीर